



22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - महावीर बनो, माया के तूफानों से लड़ने

के बजाए अचल-अडोल बनो'



प्रश्न:- ब्रह्मा बाबा के सामने अनेक हंगामें होते भी कभी रंज नहीं हुए क्यों?



उत्तर:-क्योंकि बाबा को नशा था कि हमें बाप से वर्सा लेना है। यह तो सब कल्प पहले मुआफ़िक हो रहा है नथिंग न्यु। गालियाँ तो सबसे अधिक बाप को मिली। फिर श्रीकृष्ण को भी गाली देते। अगर हमें भी गाली खानी पड़े तो क्या बड़ी बात। दुनिया हमारी बातों को जानती ही नहीं तो जरूर गाली देगी इसलिए कोई भी बात में रंज नहीं हुआ।

ऐसे ही फालो फादर।

गीत:-भोलेनाथ से निराला....

Click

भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
ऐसा बिगड़ी बनाने
वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

उनका डमरू डम डम
बोले
अगम निगम के भेद
खोले
उनका डमरू डम डम
बोले
अगम निगम के भेद
खोले
ऐसा भक्तों का
रखवाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

काया जब जब करवट
बदले
५५५ कल्प चमकते अगले
पिछले
काया जब जब करवट
बदले
५५५ कल्प चमकते अगले
पिछले
ऐसा जोग जगाने वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

तूने जग का कष्ट
मिटाय़ा
मुझको स्वामी क्यों
बिसराया
तूने जग का कष्ट
मिटाय़ा
मुझको स्वामी क्यों
बिसराया
अब तो मुझे बचाने
वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से
निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से
निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

Points:

ज्ञान

योग

धारणा

सेवा

M.imp.

ओम् शान्ति। यह भक्तिमार्ग वालों का गीत है। ज्ञान

मार्ग में गीत आदि नहीं गाया जाता है, न बनाया

जाता है, न जरूरत है क्योंकि गाया हुआ है - बाप

से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। उसमें

गीत आदि की कोई बात ही नहीं। तुम जानते हो हमें

बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। जो भक्ति

मार्ग की रसम-रिवाज है, वह इसमें नहीं आ सकती।

बच्चे कविता आदि बनाते हैं वह भी औरों को सुनाने

के लिए। वह भी जब तक तुम नहीं समझाओ तब

तक कोई समझ न सके। अब तुम बच्चों को बाप

मिला है तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बाप ने

84 जन्मों के चक्र का नॉलेज भी सुनाया है। खुशी

होनी चाहिए कि अभी हम स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं।

बाप से विष्णुपुरी के मालिक बन रहे हैं। निश्चयबुद्धि

ही विजयन्ती। जिसको निश्चय होता वह सतयुग में

जायेंगे ही। तो बच्चों को सदैव खुशी रहनी चाहिए,

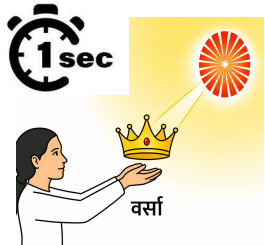
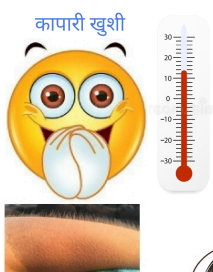
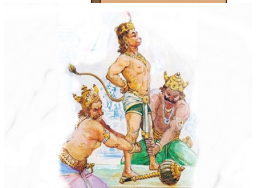
फालो फादर। बच्चे जानते हैं निराकार बाबा जब से

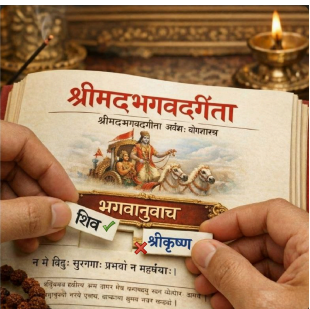
इस तन में प्रवेश हुआ है, तो इनके पास भी बड़े

हंगामें हुए। भाईयों के झगड़े, शहर के झगड़े, सारे

सिन्ध के झगड़े चले। बच्चे बड़े हुए कहेंगे, जल्दी

शादी करो। शादी बिगर काम कैसे चलेगा। गीता





यज्ञ की परदादी

बाबा महिमा करते जिनकी नेपथ्य मुरकान चेहरे और चमन से सबका खिन्वाती थी ध्यान यज्ञ की परदादी, जिनकी बड़ी निराली शान निर्मल, शीतल, शान्त आपका निर्मलशान्ता नाम

बचपन में भी करती थी सोने, हीरों का दान रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड आप तो बहुत बड़ी धनवान दुनिया की सब हरितियां करती थी सम्मान निर्मल, शीतल, शान्त आपका निर्मलशान्ता नाम

थी इन वन है बाप, आपकी ऊंची थी पहचान लेखराज, ब्रह्मा बाबा, शिवबाबा की सन्तान लगती थी सूरत आपकी ब्रह्मा बाप समान निर्मल, शीतल, शान्त आपका निर्मलशान्ता नाम

निरर्थकरी, नखापित, ना मान शान का खान सरल स्वभाव, हर्षितमुखता, अन्नमूर्खता की खान देख आपको आ जाती थी मुस्ति में भी जान निर्मल, शीतल, शान्त आपका निर्मलशान्ता नाम

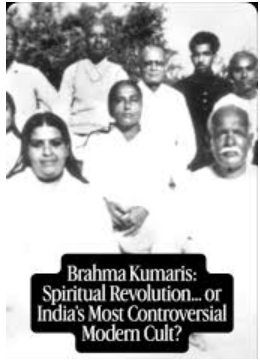
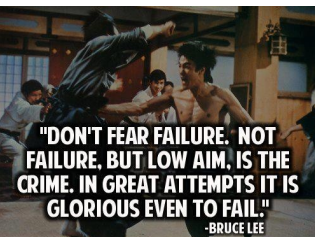
ना कोई अपना पराया, ना कोई अंजान जो मिलता महसूस करता अपनेपन का भान तन में आप फरिश्ता, अनुभव करता हर ईसान निर्मल, शीतल, शान्त आपका निर्मलशान्ता नाम

15TH MARCH AVYAKT SMRITI DIVAS



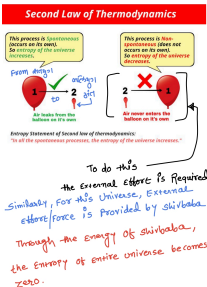
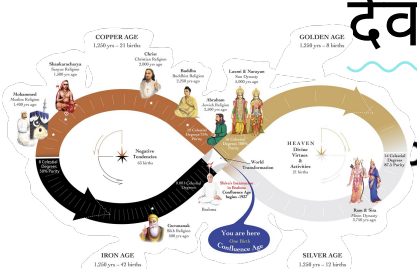
22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पढ़ना मिस नहीं करते थे, जब मालूम पड़ गया कि गीता का भगवान शिव है तो वह गीता पढ़ना छूट गई। फिर नशा चढ़ गया कि हम तो विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो शिव भगवानुवाच है तो उस गीता को छोड़ दिया और फिर पवित्रता पर बड़ा हंगामा हुआ। भाई, काके, चाचे आदि कितने थे। इसमें बहादुरी चाहिए ना। तुम हो ही महावीर महावीरनी। सिवाए एक के और कोई की परवाह नहीं। पुरुष है रचता। रचता खुद पावन बनता है तो रचना को भी पावन बनाना है। पवित्र हंस और अपवित्र बगुले, इकट्ठे कैसे रह सकते हैं। क्रियेटर तो झट हुक्म करेगा हमारी मत पर चलना है तो चलो, नहीं तो निकल जाओ। तुमको पता है लौकिक बच्ची शादी की हुई थी। उनको मिला ज्ञान, तो बोले वाह! बाप कहते हैं पवित्र बनो तो हम क्यों नहीं बनेंगे। जवाब दे दिया पति को कि हम विष नहीं देंगे। बस इस बात पर ही बहुतों का झगड़ा चला। बड़े-बड़े घरों से बच्चियाँ निकल आई, कोई भी परवाह नहीं की। जिनकी तकदीर में नहीं है तो समझ भी न सकें। पवित्र रहना है तो रहो, नहीं तो जाकर अपना प्रबन्ध करो। इतनी हिम्मत भी तो चाहिए ना। बाप के सामने कितने



"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नहीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रागों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।



22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हंगामें हुए। बाबा को कभी रंज हुआ देखा! अमेरिका

तक अखबारों में निकल गया। नथिंग न्यु। यह तो

कल्प पहले मुआफ़िक होता है, इसमें डर की बात

क्या है। हमको तो अपने बाप से वर्सा लेना है।

अपनी रचना को बचाना है। बाप जानते हैं सारी

क्रियेशन इस समय पतित है। मुझे ही सबको पावन

बनाना है। बाप को ही सब कहते हैं हे पतित-पावन,

लिबरेटर आओ। तो उनको ही तरस पड़ता है।

रहमदिल है ना। तो बाप समझाते हैं कि बच्चे कोई

भी बात में डरो मत। डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं

सकेंगे। अत्याचार, माताओं पर ही होते हैं। यह भी

निशानी है। द्रोपदी को नंगन करते हैं। बाप 21

जन्मों के लिए नंगन होने से बचाते हैं। दुनिया इन

बातों को नहीं जानती है। सद्गति दाता तो मैं हूँ ना।

जब तक मनुष्य दुर्गति को न पायें तब तक मैं कैसे

आकर सद्गति दूँ। पतित तमोप्रधान सृष्टि भी बननी

है। हर चीज़ नई से पुरानी जरूर होती है। पुराने घर

को छोड़ना ही पड़ता है। नई दुनिया गोल्डन एज,

पुरानी दुनिया आइरन एज। सदैव नई तो रह न सके।

तुम बच्चे जानते हो यह सृष्टि का चक्र है। देवी

देवताओं का राज्य फिर से स्थापन हो रहा है। बाप

oints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



v/s



22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
 कहते हैं फिर से तुमको गीता ज्ञान सुनाता हूँ। यहाँ
 रावणराज्य में दुःख है। रामराज्य किसको कहा
 जाता है, यह भी किसको पता नहीं और समझते भी
 नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग अथवा रामराज्य की
 स्थापना करने आया हूँ। तुम बच्चों ने अनेक बार
 राज्य लिया और फिर गँवाया है। यह सबकी बुद्धि में
 है। 21 जन्म सतयुग में रहते हैं, उसको कहा जाता है
 21 पीढ़ी अर्थात् जब बूढ़े होते हैं तब शरीर छोड़ते
 हैं। अकाले मृत्यु कभी होती नहीं। अब तुम जैसे
 त्रिकालदर्शी बन गये हो। अभी तुम जानते हो हम
 जन्म-जन्मान्तर भक्ति करते हैं। रावण राज्य में भी
 भभका देखो कितना है। यह है पिछाड़ी का भभका।
 रामराज्य सतयुग में होगा - वहाँ यह विमान आदि
 सब थे फिर यह सब गुम हो गये। फिर इस समय यह
 सब निकले हैं। अभी यह सब सीख रहे हैं। जो
 सीखने वाले हैं वह संस्कार ले जायेंगे। फिर आकर
 वहाँ विमान बनायेंगे। यह तुमको भविष्य में सुख देने
 वाले हैं। यह विमान आदि भारतवासी भी बना सकते
 हैं। कोई नई बात नहीं। अक्लमंद तो हैं ना। यह
 सांडिस तुमको फिर काम आयेगी। अभी यह सांडिस
 दुःख के लिए है फिर वहाँ सुख के लिए होगी। वहाँ



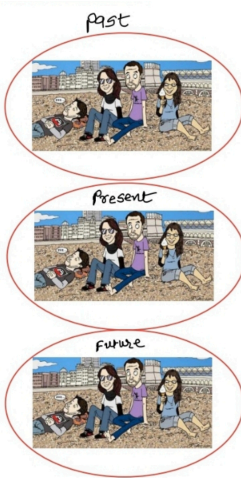
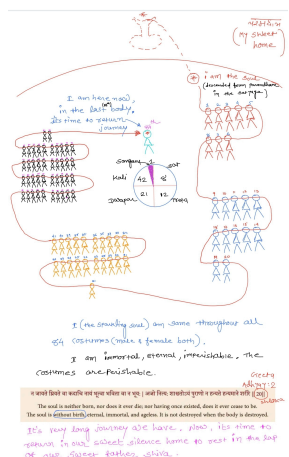
Point

योग

धारणा

सेवा

M.imp.



22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
तो हर चीज़ नई होगी। अभी तो नई दुनिया की
स्थापना हो रही है। बाप ही नई दुनिया की राजधानी
स्थापन कर रहे हैं। तो बच्चों को महावीर बनना है।
दुनिया में यह कोई थोड़ेही जानते कि भगवान आया
हुआ है।

Exclusive Authority of Shiv baba

But we know, How Lucky & Great we are..!



बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल
समान पवित्र रहो। इसमें डरने की बात नहीं, करके
गाली देंगे। गाली इनको भी बहुत दी है। श्रीकृष्ण ने
गाली खाई, ऐसा दिखाते हैं। अब श्रीकृष्ण तो गाली
खा न सके। गाली तो कलियुग में खाते हैं। तुम्हारा
रूप जो अभी है फिर कल्प बाद इस समय होगा।
बीच में हो न सके। जन्म बाई जन्म फीचर्स बदलते
जाते हैं। एक आत्मा को 84 जन्मों में एक जैसे
फीचर्स मिल न सके। सतो रजो तमो में आते जाते हैं,
फीचर्स बदलते जाते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। 84

कवि - भगवान

अब तुम जानते हो इनके फीचर्स बदल दूसरे जन्म में
यह लक्ष्मी-नारायण हो जायेंगे। तुम्हारी बुद्धि का

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



Come on...
Shake me,
If you Can...



ताला अब खुला है। अब यह है नई बात। बाबा भी नया, बातें भी नई। यह बातें किसकी समझ में जल्दी नहीं आयेंगी। जब तकदीर में हो तब कुछ समझें। महावीर कोई तूफान से डरेंगे नहीं। वह अवस्था पिछाड़ी में होनी है इसलिए गाया हुआ है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप गोपियों से पूछो। बाप आये ही हैं तुम बच्चों को स्वर्ग के लायक बनाने। कल्प पहले मिसल नर्क का विनाश तो होना ही है। सतयुग में तो एक ही धर्म होगा। चाहते भी हैं वननेस हो। एक धर्म होना चाहिए। यह भी किसको पता नहीं है कि रामराज्य, रावण राज्य अलग-अलग है। यहाँ विकार बिगर जन्म हो न सके। मूत पलीती हैं ना। अब बाप में निश्चय है तो श्रीमत पर पूरी रीति चलना पड़े ना। हर एक की नब्ज भी देखी जाती है। उस अनुसार राय भी दी जाती है। बाबा ने भी बच्चों को कहा कि अगर शादी करनी है तो जाकर करो। बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि बैठे हैं, उनको शादी करा लेंगे। तो हर एक की नब्ज देखी जाती है। पूछते हैं बाबा; इस हालत में हैं, हम पवित्र रहने चाहते हैं, हमारे सम्बन्धी हमको घर से निकालने चाहते हैं। अब क्या करना है? यह पूछते हो, पवित्र रहना है। अगर नहीं

22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

रह सकते हो तो जाकर शादी करो। अच्छा समझो किसकी सगाई हुई है। राज़ी करना है, हर्जा थोड़ेही हैं।

हथियाला जब बांधते हैं तो भी कहते हैं - यह तुम्हारा पति गुरु है। अच्छा उस समय तुम उनसे लिखवाते जाना।

मानती हो मैं तुम्हारा गुरु ईश्वर हूँ, लिखो। अच्छा अब मैं तुमको हुक्म देता हूँ, पवित्र रहना है। हिम्मत चाहिए ना। मंजिल बहुत भारी है।

दोनों इकट्ठे कैसे रहते हैं, यह सबको दिखलाना है। प्राप्ति बहुत जबरदस्त है। आग तब लगती है जब प्राप्ति का पता नहीं है।

बाप कहते हैं - इतनी बड़ी प्राप्ति होती है तो एक जन्म पवित्र रहो, तो क्या बड़ी बात है। हम तुम्हारा पति ईश्वर हैं। हमारी आज्ञा पर पवित्र रहना पड़ेगा।

बाप युक्तियाँ बता देते हैं। भारत में यह कायदा है, स्त्री को कहते हैं तुम्हारा पति ईश्वर है, उनकी आज्ञा पर चलना है।

पति के पांव दबाना है क्योंकि समझते हैं लक्ष्मी ने नारायण के पांव दबाये थे। यह आदत कहाँ से निकली? इन झूठे चित्रों से।

सतयुग में तो ऐसी बातें होती नहीं। नारायण कब थकता है क्या जो लक्ष्मी बैठ पांव दबायेगी? थकावट की बात हो न सके।

यह तो दुःख की बात हो जाती है। वहाँ दुःख कहाँ से आया। तो कितनी झूठी बातें



लिख दी हैं। बाबा को छोटेपन से ही वैराग्य रहता था, इसलिए भक्ति करते थे।



बाबा बच्चों को युक्ति बहुत अच्छी बताते हैं। कोई बच्चे को सम्बन्धी तंग करते हैं, अच्छा शादी कर लो। स्त्री तुम्हारी हो गई। फिर कोई कुछ कर न सके। आपस में मिल पवित्र रहो, कम्पैनियन हो गये।



विलायत में बूढ़े होते हैं तो सम्भाल के लिए कम्पैनियन रख देते हैं। सिविल मैरेज करते हैं।



विकार में नहीं जायेंगे। अब तुम जानते हो हम एक बाप के बच्चे हैं, आपस में भाई-बहन हो गये। दादे से वर्सा लेते हैं। बाप को बुलाते भी पतित दुनिया में हैं।



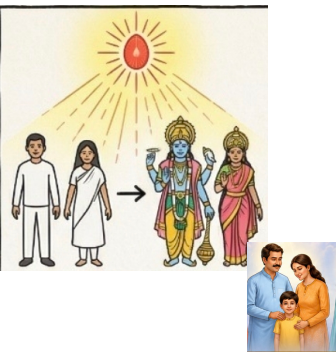
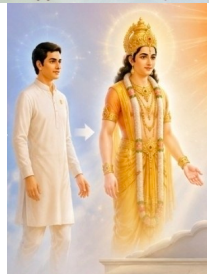
हे पतित-पावन, सब सीताओं के राम। मनुष्य राम-राम जपते हैं तो सीता को थोड़ेही याद करते हैं।



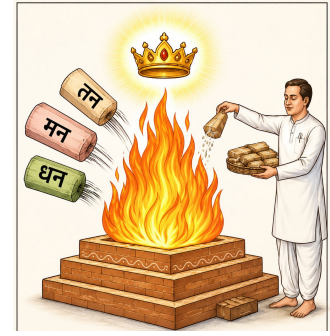
उनसे बड़ी तो लक्ष्मी है। परन्तु याद तो एक बाप को करते हैं। लक्ष्मी-नारायण को फिर भी जानते हैं, शिव



को तो कोई जानते नहीं। आत्मा बिन्दी है तो आत्माओं का बाप भी बिन्दी होगा ना। आत्मा में सारा ज्ञान है। उनको कहा जाता है ज्ञान का सागर।



तुम आत्मा भी ज्ञान सागर बनती हो। ज्ञान सागर बैठ तुम आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा चैतन्य है। तुम्हारी आत्मा ज्ञान का सागर बन रही है। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तुमको है। मीठे बच्चों को हिम्मत रखनी चाहिए। हमको बाबा की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाते हैं तो बाप कहते हैं तुम भी अपनी रचना को हाथ में रखो। अगर बच्चा तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता है तो बच्चा, बच्चा नहीं। वह तो कपूत ठहरा। आज्ञाकारी, फरमानबरदार बच्चा हो तो वर्से का हकदार बन सकता। बेहद का बाप भी कहते हैं मेरी श्रीमत पर चलेंगे तो तुम ऐसे श्रेष्ठ बनेंगे। नहीं तो प्रजा में चले जायेंगे। बाप तुमको नर से नारायण बनाने आये हैं। यह है सच्ची सत्य नारायण की कथा। तुम राजाई प्राप्त करने आये हो। अब मम्मा बाबा राजा रानी बनते हैं तो तुम भी हिम्मत करो। बाप तो जरूर आप समान बनायेंगे। प्रजा बनने में ही राजी नहीं होना चाहिए। पुरुषार्थ करना है - हम बाप से पूरा वर्सा लेंगे, वारी जायेंगे। तुम उनको अपना वारिस बनायेंगे तो यह तुमको 21 जन्मों के लिए वर्सा देंगे। बाप बच्चों पर वारी जाते



22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

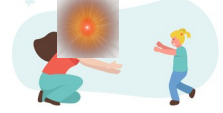
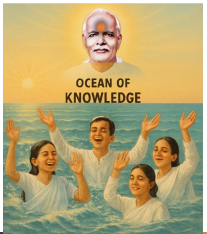
हैं। बच्चे कहते हैं बाबा यह तन-मन-धन सब आपका है। आप बाप भी हो तो बच्चे भी हो। त्वमेव माता च पिता त्वमेव। एक बाप की महिमा कितनी बड़ी है। दुनिया में इन बातों को कोई नहीं जानते। भारत की ही सारी बात है। तुम बच्चे जानते हो यह वही 5 हजार वर्ष पहले वाली लड़ाई है। अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। तो बच्चों को सदैव बहुत खुशी में रहना चाहिए। ^{देव}भगवान ने तुमको एडाप्ट किया है तो तुमको खुशी होनी चाहिए। फिर तुम बच्चों का बाप श्रृंगार कर रहे हैं। पढ़ाते भी हैं – बेहद का बाप, ज्ञान का सागर है। हमको सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं। जो बाप को ही नहीं जानते, वह हैं नास्तिक। तुम बाप और रचना को जानते हो, तुम हो आस्तिक। लक्ष्मी-नारायण आस्तिक हैं या नास्तिक? तुम क्या कहेंगे? तुम खुद कहते हो सतयुग में परमात्मा को कोई याद नहीं करते हैं। वहाँ है सुख, तो सुख में परमात्मा का सिमरण करते नहीं क्योंकि परमात्मा को जानते नहीं। इस समय तुम आस्तिक बनकर वर्सा पा रहे हो। फिर वहाँ याद ही नहीं करते हो। यहाँ याद करते हैं परन्तु उनको जानते नहीं हैं इसलिए नास्तिक कहा जाता है। वहाँ

यस्यतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः
अथर्ववेद २/२/१

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी है। वही सबके द्वारा नमस्कार करने के योग्य है, वही प्रशंसा करने के योग्य है।



CHILD ADOPTION



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



जानते भी नहीं तो याद भी नहीं करते। उन्होंने को यह भी पता नहीं होगा कि यह वर्सा हमको शिवबाबा से मिला है। लेकिन उनको नास्तिक नहीं कहेंगे क्योंकि पावन है। अच्छा!

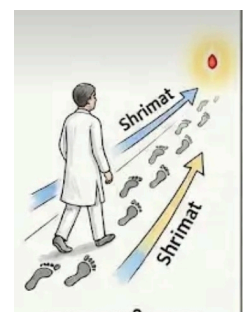
Point to be Noted



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) श्रीमत पर चलने की पूरी-पूरी हिम्मत रखनी है। किसी भी बात में डरना वा रंज (नाराज) नहीं होना है।



2) अपनी रचना अपने हाथ में रखनी है। उन्हें विकारों से बचाना है। पावन बनने की राय देनी है।



Points:

ज्ञान

र

गा

सेवा

M.imp.



Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

22-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सदा बाप के सम्मुख रह खुशी का अनुभव करने वाले अथक और आलस्य रहित भव

Finale Achievement

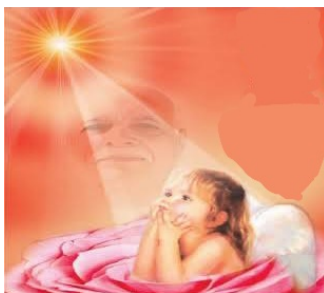


कोई भी प्रकार के संस्कार या स्वभाव को परिवर्तन करने में दिलशिकस्त होना या अलबेलापन आना भी थकना है, इससे अथक बनो।

अथक का अर्थ है जिसमें आलस्य न हो।

जो बच्चे ऐसे आलस्य रहित हैं वे सदा बाप के सम्मुख रहते और खुशी का अनुभव करते हैं।

उनके मन में कभी दुःख की लहर नहीं आ सकती इसलिए सदा सम्मुख रहो और खुशी का अनुभव करो।



स्लोगन: - सिद्धि स्वरूप बनने के लिए हर संकल्प में पुण्य और बोल में दुआयें जमा करते चलो।



Points:

M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



जिसका आपके प्रति शुभ भाव है उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो, उपकारी पर उपकार करते हो, यह कोई बड़ी बात नहीं है।

लेकिन कोई आपको बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे,

फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिंतक का, अचल-अटल भाव हो, बात के कारण भाव न बदले, कोई अपकार करे, आप एक सेकेण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर दो तब कहेंगे कमाल।



Points:

ज्ञान

योग

धारणा

सेवा

M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.1 सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो:

(अ) मीठे बच्चे सुबह का समय बहुत अच्छा है। सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो याद ठहरेगी, फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। तुम देखते हो कई बच्चे सवेरे उठ नहीं सकते। 10-15 वर्ष मेहनत करते आये हैं, तो भी समय पर उठ नहीं सकते। कम से कम 3-4 बजे तो उठो। भक्त लोग भी सवेरे उठ कर ध्यान करते हैं, जाप करते हैं हनुमान का, शिव का। तो सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को प्यार से याद करने की आदत पक्की डालनी है। रात को जल्दी सो जाओ। कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की। बहुत जमा करना है ना! तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

(आ) कॉलेज के बच्चे भी सवेरे उठ कर अध्ययन करते हैं। सवेरे क्यों बैठते हैं? क्योंकि आत्मा विश्राम कर रिफ्रेश हो जाती है। सवेरे उठने का शौक होना चाहिए। क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर भी रात को बाहर बत्ती के नीचे जा कर पढ़ता था। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञानमार्ग में सवेरे उठ कर बाप को याद करना चाहिए। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धन्धा बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 बजे का अच्छा होता है। सत्संग आदि भी सवेरे और शाम को करते हैं।

100

AmritVela.p65



2/18/2010, 11:58 AM

Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise.
Benjamin Franklin



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

(इ) मीठे बच्चे, याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय अन्तर्मुखी बन आत्म-स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

Attention..!

(ई) सवेरे-सवेरे उठ याद में ज़रूर बैठना चाहिए। इसमें गफलत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है। बच्चे, माया से भी डरो मत। भल कितना भी भुलाने की कोशिश करे, लेकिन थको नहीं। अमृतवेले उठ याद में रहने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर बहाने बहुत बनाते हैं। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं हैं, तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना — यह तो गँवाना है। इसलिए सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

Point to be Noted

